# अहंकार शक्तियों का क्षय-द्वार

ब्र.कु.सूर्य.....

वश्वामित्र ने महर्षि वशिष्ठ को परास्त करने के लिए वर्षों तक कठोर तप किया। परंतु वह महान तपस्वी ईश्वरीय शक्तियों से सम्पन्न न बन सका। उसने तपस्या के द्वारा अनेक अस्त्र-शस्त्र प्राप्त किए, परंतु वह बलवान न बन सका। राक्षस उसके यज्ञ में विघ्न डालते रहे, वह उनका संहार न कर सका। इसका कारण क्या था? मनोवृत्ति में अहंकार का भाव और प्रतिद्वंदता का भाव, जिसने उसे निष्काम योगी नहीं बनने दिया, फलत: उसकी एकत्रित शक्तियां नष्ट होती रहीं, अनेक बार उसे हार का मुंह देखा पड़ा। कहना असत्य न होगा कि वह महान तपस्वी सफल नहीं हुआ।

स्वयं योगेश्वर भगवान द्वारा सिखाये गये राजयोग का अभ्यास करने वाला तपस्वी, चाहे कितनी भी कठिन तपस्या करें, परंतु यदि उसमें सूक्ष्म अपवित्रता की वृत्ति और बुद्धि का अहं नष्ट नहीं होता, तो ये दोनों ही कमजोरियां शक्तियों का क्षय द्वार बन जाती हैं। और अनेक बार मनुष्यात्मा स्वयं को माया से हारी हुई अनुभव करती है और समय पर निर्बल महसूस करती है। प्रस्तुत चर्चा में हम बुद्धि के अहंकार का विश्लेषण करेंगे ताकि स्वयं को सूक्ष्मता से चेक कर सकें, इसका दर्पण बनाने का प्रयास भी करेंगे।

**बुद्धि आत्मा की विवेक शक्ति है -** बुद्धि विवेक-शक्ति है, इसी के द्वारा संकल्प-शक्ति पर नियंत्रण किया जाता है। योगाभ्यास में जब मनुष्य अशरीरी बनकर सर्वशक्तिवान से बुद्धि को जोड़ता है तो बुद्धि में शक्तियों का प्रवाह प्रवेश करने लगता है और बुद्धि शक्तिशाली हो जाती है। बुद्धि का शक्तिशाली बनना ही आत्मा का शक्तिशाली बनना है। परंतु शक्तिशाली बुद्धि यदि दिव्य नहीं है तो मनुष्य अपनी बुद्धि का दुरुपयोग करने लगता है और उसमें अहंकार प्रवेश कर लेता है। इससे बुद्धि कमजोर होने लगती है और मन पर अपना नियंत्रण खो देती है। फलस्वरूप मन स्वछंद हो जाता है, जो कि अशांति और तनाव का कारण बनता है।

दिव्य बुद्धि ही दिव्य जीवन का निर्माण करती है। बुद्धि तो सभी के पास है, परंतु कोई उसका प्रयोग जीवन को दिव्य बनाने में करता है और कोई उसमें अहंकार का समावेश कर अपने व दूसरों के जीवन में बाधाएं उत्पन्न कर देता है। तो यह अहंकार ही पवित्र आत्माओं के जीवन में सबसे बड़ा रोड़ा है, अत: इस छुपे चोर को पहचानकर नष्ट कर देना चाहिए।

**अहंकार से हानियां -**

- अहंकारी मनुष्य की बुद्धि का विकास नहीं होता, क्योंकि वह सदा ही इस नशे में रहता है कि मैं तो सब कुछ जानता हूँ। उसमें सीखने की भावना नहीं रहती। फलत: उसकी बुद्धि का विकास रूक जाता है। वास्तव में सब कुछ जान लेने के बाद तो मनुष्य संपूर्ण हो जाता है। जब तक अपूर्णता है, मनुष्य को सीखने के द्वार खोलकर रखने चाहिए।

- अहम् मनुष्य को महान नहीं बनने देता, अहम् मनुष्य की महानताओं में विष तुल्य है, अहम् मनुष्य की महानताओं के चारों ओर मानो धूल की छत्र-छाया लगा देता है। आज चारों ओर अनेक विद्वान व तपस्वी नजर आते हैं, परंतु अहम् के कारण, समाज पर उनकी महानताओं की छाप नहीं पड़ने पाती। यही कारण है कि मनुष्य की आस्था उनमें कम होती जा रही है।

**ज्ञानी आत्मा का कर्त्तव्य है इस अहम् को पहचानना कि जीवन में अहंकार कहां-कहां कार्यरत है और फिर उसे निकालना। यदि ज्ञान-योग का पथिक इस सूक्ष्म अहंकार को नहीं परख पाता तो सतत् उसकी शक्तियों का ह्रास होता रहता है और उसका भविष्य गहन अंधकार में प्रवेश कर जाता है।**

- अहंकारी मनुष्य अयोग्य होते हुए भी प्रतिद्वंदी बनकर रहता है। प्रसिद्ध उदाहरण है - महात्मा बुद्ध के साथ देवदत्त का। उसने जीवन-भर महात्मा बुद्ध के साथ प्रतिद्वंदता की, संघ को तोड़ा। परंतु आज महात्मा बुद्ध विश्व प्रख्यात हैं और देवदत्त को कोई याद भी नहीं करता। इस प्रतिद्वंदता में अहंकारी मनुष्य को सदा ही हार का मुंह देखना पड़ता है। अत: यह कहना उपयुक्त होगा कि जहां अहंकार है वहीं हार है। अहंकार आते ही मनुष्य को हार अनुभव होती है। साथ ही साथ देवदत्त की ही तरह ऐसे अहंकारी मनुष्य का जीवन भी आत्म-ग्लानि से भरपूर रहता है और उसका अंत भी ग्लानिपूर्ण ही होता है।

- अहंकारी मनुष्य को स्वप्न में भी सुख-शांति भासित नहीं होती। क्योंकि अहंकार परस्पर टकराव का कारण बनता है जब कभी लोग उसके अहंकार को ठेस पहुंचाते हैं वह आत्म-संयम खो बैठता है। फलस्वरूप वह जलता-भुनता रहता है और अपनी अमूल्य निधि सुख-शांति को जलाकर राख कर देता है।

- अहंकारी मनुष्य का चित्त कभी भी स्थिर नहीं रहता। चाहे वह योगाभ्यास में कितनी भी एकाग्रता का अभ्यास क्यों न करे, उसकी एकाग्रता हठपूर्वक तो हो सकती है, परंतु ज्ञान-बल से नहीं। क्योंकि गुह्य ज्ञान अहंकारी बुद्धि से तत्काल ही फिसल जाता है। उसे सभी अल्पज्ञानी व अवगुणी नजर आते हैं। 'मैं ही सब कुछ हूँ' - यह आभास उसे सत्य की शक्ति का आभास नहीं होने देता।

- अहंकारी मनुष्य बहुत बातूनी होता है, क्योंकि वह हर जगह अपनी होशियारी दिखाने को आतुर रहता है। इस अभिमान के कारण उसे कई जगह अपमान भी देखना पड़ता है। इस प्रकार बाह्यमुखी हुआ योगी अपनी सूक्ष्म-शक्तियों को नष्ट करता रहता है। और यही कारण है कि कोई भी अन्य व्यक्ति उसे योगी कहने को तैयार नहीं होता।

- यह एक अत्यंत सूक्ष्म सत्य है कि बुद्धि का अहंकार कई विघ्नों का कारण है तथा यह विघ्नों का आह्वान करने वाला भी है। इस सत्य को सूक्ष्मता से अनुभव करने की आवश्यकता है। अत: अहंकारयुक्त मनुष्य अनेक बार स्वयं को विघ्नों से घिरा हुआ पाता है। परंतु वह इसका कारण नहीं समझ पाता। इस अहंकार का ही दूसरा स्वरूप मैं पन भी है। और यह मैं पन का बोझ ही मनुष्य को सरलचित्त होकर उड़ने नहीं देता।

**अहंकारी मनुष्य का भविष्य अंधकार में -** प्रत्येक मनुष्य में कुछ-न-कुछ अंश अहंकार का रहता ही है। ज्ञानी आत्मा का कर्त्तव्य है इस अहम् को पहचानना कि जीवन में अहंकार कहां-कहां कार्यरत है और फिर उसे निकालना। यदि ज्ञान-योग का पथिक इस सूक्ष्म अहंकार को नहीं परख पाता तो सतत् उसकी शक्तियों का ह्रास होता रहता है और उसका भविष्य गहन अंधकार में प्रवेश कर जाता है।

- अहंकारी मनुष्य सभी का स्नेह व सहयोग खो देता है। अंतत: वह स्वयं को अकेला ही पाता है। कोई भी उसके समीप नहीं जाना चाहता। वास्तव में अहंकार ही संगठन की शक्ति को तोड़ता है। फलत: कार्यक्षेत्र में कठिनाइयां बढ़ जाती है और छोटे-छोटे कार्य करने में भी काफी शक्ति तन, मन व धन की व्यय होती है।

---

**सेवक वह....** पृष्ठ 1 का शेष

सामाजिक सेवाओं को फलीभूत किया जा सकता है। जीवन में आध्यात्मिकता का समावेश कर दृढ़ता का गुण धारण कर लिया जाए, तो सामाजिक विकास की सफलता प्राप्त करने के लिए कोई भी समस्या सामने नहीं आ सकती है।

समाज सेवा प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु.संतोष ने कहा कि समाज को श्रेष्ठ संस्कारों से सिचिंत करने के लिए समाज सेवकों को अपने वैचारिक धरातल को सकारात्मक बनाकर अपनी विशेष जिम्मेदारी समझनी होगी। अंतरराष्ट्रीय रोटरी प्रांतपाल लोकेंद्र पप्पल ने कहा कि स्वस्थ समाज के निर्माण में भौतिक पक्ष पर जोर न देकर आध्यात्मिक पक्ष पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। समाज सेवा प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु.अमीरचंद ने कहा कि लोक कल्याण व देश के विकास के लिए सामाजिक कार्यकर्ताओं को मतभेदों को भुलाकर एक मत होना समय की मांग है, तभी हम भारत को सोने की चिड़िया बना सकते हैं।

इस कार्यक्रम को राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु.प्रेम सिंह व मुम्बई की ब्र.कु.वंदना ने भी सम्बोधित किया।

**भरूच।** ट्रांसपोर्ट प्रभाग के ट्रेनिंग प्रोग्राम का उद्घाटन करने के पश्चात् प्रभु स्मृति में हैं राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु.दिव्या बहन, ब्र.कु.प्रभा बहन,ब्र.कु.गीताए नवसारीए ब्र.कु.नंदा, अहमदाबाद।

**नवसारी।** आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए स्टेशन मास्टर अनुप शर्मा, अशोक पाटिल, ब्र.कु.भानु तथा अन्य।

**सूर्यपुरा, नेपाल।** सांसद रामनाथ ढकालको को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.शशी।

**उस्मानाबाद।** उर्दू शिक्षिका एवं समाज सेविका सैय्यद तब्बसूम को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट कर सम्मानित करते हुए ब्र.कु.सखू।

**पानीपत।** कुलभूषण मित्तल एवं आरती मित्तल को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.भारत भूषण साथ में हैं ब्र.कु.सुनीता।

**रूपन्देही।** पर्यटक प्रवर्द्धन विकास समिति के अध्यक्ष देवी चौधरी को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ग्रुप फोटो में हैं ब्र.कु.शांति एवं ब्र.कु.भूपेन्द्र।